'kf{kd rduhd% vk/kfud izofÙk;ka dh vko';drk

ugk ftUny
प्रवक्ता, जे0वी0 जैन कालिज, सहारनपुर, उ0प्र0, भारत

lkjka'k

देश की शिक्षा प्रणाली एवं विकास के लिए शिक्षा जैसे महत्व उपकरण को विकसित तथा स्थापित किया है। इन सभी संकेतों तथा उपकरणों की सहायता से मानव भली–भाँति जीवन यापन कर सकता है और प्रगति कर सकता है। आधुनिक समय में राष्ट्रीयकरण को संकुचित विचारधारा से प्रभावित मानते है। क्योंकि आज देश आत्मनिर्भर नहीं है तथा एक देश की समस्याये तथा गति विधियाँ पड़ोसी देशों को प्रभावित करती है। आज विश्व के सभी देश विश्व–युद्ध की विभीषिकाओं से बचना चाहते हैं। इसका शिक्षा ही एक मात्र सशक्त उपाय/यन्त्र है। मानव प्रकृति के परिवर्तन में शिक्षा ही मुख्य कारक तथा साधन है। औपचारिक तथा अनौपचारिक शिक्षा ने ग्रामीण जनसंख्या को औद्योगीकरण की ओर अधिक तीव्रता से बदला है। कुछ पीढियों के अन्तराल में औद्योगिक संस्कृति को बदल दिया है। मानवों के प्रशिक्षण एवं विकास के लिए शिक्षा जैसे महत्व उपकरण को विकसित तथा स्थापित किया है। इन सभी संकेतों तथा उपकरणों की सहायता से मानव भली–भाँति जीवन यापन कर सकता है और प्रगति कर सकता है। इन सभी को ध्यान में रखते हुए इस शोध– पत्र में शिक्षा तकनीकी में आधुनिक प्रवृत्तियों की आवश्यकता पर बल दिया जायेगा।

सांस्कृतिक परिवर्तन के लिए शिक्षा एक प्रमुख उपकरण है। मानव प्रकृति में शिक्षा के द्वारा परिवर्तन लाया जा सकता है। अर्थात हम कह सकते है कि मानव प्रकृति के परिवर्तन में शिक्षा ही मुख्य कारक तथा साधन है। औपचारिक तथा अनौपचारिक शिक्षा ने ग्रामीण जनसंख्या को औद्योगीकरण की तरफ मोड़ते हुए तीव्रता से बदला है। कुछ पीढियों ने अन्तराल में ही औद्योगिक संस्कृति से सब बदल गया है।

विश्व के किन्हीं दो देशों की शिक्षा प्रणालीयाँ समान नहीं है। विश्व के प्रत्येक देश की प्रणाली का प्रारूप अपना है और अन्य देशों से भिन्न है किसी देश की शिक्षा प्रणाली उस देश की संस्कृति पर भिन्न होती है।

शैक्षिक तकनीकी की अवधारणा में उद्योग तकनीकी, कृषि तकनीकी, तथा स्वास्थ्य तकनीकी के बाद आज भारत में शैक्षिक तकनीकी की चर्चा होने लगी है। परन्तु अभी तक शिक्षा के क्षेत्र में काम करने वाले कार्य कर्त्ताओं में शैक्षिक तकनीकी की अवधारणा सुस्पष्ट नहीं है।

स्वामी विवेकानन्द के मतानुसार :– शिक्षा से तात्पर्य – "मानव में अन्तर्निहित शक्तियों का बाहर की ओर विकास"। अर्थात हम शिक्षा को "विकास सम्बन्धी प्रक्रिया" कह सकते है।

प्रायः 'तकनीकी' शब्द के कारण समझा जाता है कि "शैक्षिक तकनीकी का सम्बन्ध आधुनिक अविश्कृत नवीन यन्त्रों या मशीनों के साथ है। पूर्व में विदेशों में भी यही अवधारणा थी कि यन्त्रों या मशीनों के साथ है। पूर्व में विदेशों में भी यही अवधारणा थी कि यन्त्रों या मशीनों का प्रयोग शिक्षा में भी हो परन्तु 'ओफिस' का मत था– 'विज्ञान का कला में प्रयोग तकनीकी है यह आवश्यक नहीं है कि प्रत्येक समय में तकनीकी में यन्त्रों या मशीनों का प्रयोग किया ही जाये। तकनीकी का अभिप्राय है – "कोई भी ऐसा प्रयोगात्मक कार्य जिसमें वैज्ञानिक ज्ञान या वैज्ञानिक सिद्धान्त का प्रयोग किया जाये।

शैक्षिक तकनीकी सीखने और सिखाने की दिशाओं में वैज्ञानिक ज्ञान का प्रयोग करती है जिसके द्वारा शिक्षण एवं प्रशिक्षण की प्रक्रिया से प्रभावपूर्णता और दक्षता का विकास कर उसमें सुधार लाया जाता है। शैक्षिक तकनीकी में आधुनिक शिक्षा की प्रवृत्तियों हेतु कुछ उत्तरदायी कारक भी है :– जैसे राष्ट्रीय एकता का भाव अथवा राष्ट्रीयता, सांस्कृतिक धरोहर का अनुरक्षण, बहुसंख्यक तथा अल्पसंख्यक की समस्या हेतू आर्थिक क्षमतायें, राष्ट्रीय हितों का संरक्षण, धनी और गरीबों की खाई को पाटना, शिक्षा प्रणाली का राजनैतिक आधार, राष्ट्रीय भाषा, संस्कृति एवं राष्ट्रीय भाषा, भाषा की समस्या अन्तराष्ट्रीय सहयोग एवं सद्भावना, राष्ट्रीय चरित्र एवं राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली।

किसी भी देश की शिक्षा प्रणाली का विकास अधिक सफलता से किया जा सकता है। जब कि देश के व्यक्तियों में राष्ट्रीय एकता का भाव हो अथवा उनमें राष्ट्रीयता हो शिक्षा के विकास में इस प्रकार की भावनाओं की आवष्यकता होती है। भारत जैसे विशाल देश में व्यक्तियों में विषमता अधिक है। और राष्ट्रीयता से पहले प्रान्तीयता का भाव अधिक होता है। इसलिए राष्ट्रीय एकता की भावना के लिए शिक्षा के राष्ट्रीयकरण पर अधिक बल दिया जा रहा है। जिससे प्रान्तीयता की संकुचित भावना से ऊपर उठ कर राष्ट्रीयता की भावना का विकास किया जा सके।

शैक्षिक तकनीकी में किसी देश की शिक्षा प्रणाली का प्रारूप ऐसा होना जिससे राष्ट्रीय हितों का अनुरक्षण हो सके और नौकरियों तथा रोजगार के अवसर सृजित किये जा सके। आर्थिक विकास तथा राष्ट्रीयता की भावना के विकास से राष्ट्रीयता के हितों का संरक्षण भी किया जा सकता है। शैक्षिक तकनीकी में राजनैतिक आधार पर शिक्षा प्रणाली के विकसित करते समय निम्न कारकों को ध्यान में रखा जाना चाहिए जैसेः– व्यक्ति एवं राजनैतिक प्रणाली एवं शिक्षा, प्रजातंत्र एवं शिक्षा प्रणाली, शिक्षा दर्शन एवं शैक्षिक विचार धारा, आज के समय में शैक्षिक तकनीकी महत्वपूर्ण स्थान रखती है। चूकिः–

1. शिक्षण के लक्ष्यों को व्यवहारिक रूप में निर्धारित किया जा सकता है।
2. परीक्षा के वर्तमान तरीकों में सुधार लाया जा सकता है।
3. विद्यार्थीयों की क्षमताओं और कुशलताओं का विष्लेषण किया जा सकता है।
4. विद्यार्थीयों का विश्लेषण एवं मूल्यांकन किया जा सकता है।
5. कक्षा शिक्षण को सरल, बोधगम्य, प्रभावकारी स्पष्ट और रूचिकर बनाया जा सकता है।
6. इसके द्वारा विद्यार्थीयों की आवश्यकता का विश्लेषण किया जा सकता है।
7. दूरस्थ शिक्षा में कठोर तथा कोमल उपागमों के प्रयोग को प्रोत्साहित किया जा सकता है।
8. प्रमाणकत्ताओं के लिए शोध–निष्कर्षों के आधार पर निर्देशन–रेखाओं को अनुदित किया जा सकता है।

'kf{kd rduhdh dk {ks= %&

शैक्षिक तकनीकी का क्षेत्र व्यापक होता जा रहा है। इसके अन्तर्गत निम्नलिखित शिक्षण विधियाँ सम्मिलित है :– व्यक्तिगत शिक्षण, कक्षा–शिक्षण, दूर शिक्षा, जन शिक्षा इसमें इस बात पर बल दिया जाता है कि इसके द्वारा निर्मित विधियों में छात्र स्वयं अपने प्रयास से शिक्षा ग्रहण करें। प्रोग्राम शिक्षण एक ऐसी विधि है। आज शैक्षिक तकनीकी में कोमल उपागम पक्ष के अन्तर्गत भी ऐसी प्रविधियाँ होती है। जो निरीक्षत परिवेश में व्यक्ति को सीखने पर बल देती है। कक्षा शिक्षण में कठोर उपागम का प्रयोग बढ़ रहा है। चलचित्र तथा दूरदर्शन के कार्यक्रमों के द्वारा छात्रों की रूचि दुर्बोध से दुर्बोध पाठ में भी जाग्रत कर दी जाती है। शैक्षिक तकनीकी के प्रयोग ने शिक्षण की अनेक प्रविधियों को भलि भांति परिष्कृत किया है।

दूर शिक्षा तथा जन शिक्षा के अन्तर्गत भी दूरदर्शन, विडियो, चलचित्र, आकाशवाणी आदि महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर रहे है। मूलतः शैक्षिक तकनीकी तीन प्रकार की होती है।

vuqns'ku rduhdh] 0;ogkj rduhdh] f'k{k.k rduhdh &

1. अनुदेशन तकनीकी में व्यापक है कक्ष और कक्षा के बाहर दोनो ही स्थान पर पाठ्य वस्तु का प्रस्तुत करने की प्रक्रिया सम्मिलित की है।
2. व्यवहार तकनीकी में जहाँ–जहाँ व्यक्ति के व्यवहार की बात आती है। वहाँ – वहाँ व्यवहार तकनीकी का प्रवेश है या हो सकता है।
3. शिक्षण –तकनीकी का अभिप्राय है – समाजशास्त्र मनोविज्ञान तथा अभियान्त्रिकी के सिद्धान्तों तथा नियमों को शिक्षण के क्षेत्र में प्रयोग करना।

milagkj &

इन सभी विचार धाराओं को ध्यान में रखते हुए हम आज के समय में शिक्षा में विभिन्न आधुनिक प्रवृत्तियो का उपयोग कर रहे है। आज शिक्षा के क्षेत्र में दूरस्थ शिक्षा, पत्राचार शिक्षा उपग्रह इन्सैट द्वारा शिक्षा, कम्प्यूटर द्वारा शिक्षा, ईलर्निंग का महत्वपूर्ण स्थान तथा आवश्यकता है। सरकार द्वारा भी इसकी उपयोगिता को समझा जा रहा है। तथा वह भी विभिन्न प्रकार के अभियानों के माध्यम से शैक्षणिक तकनीकी में आधुनिक प्रवृत्तियों को बढावा दे रही है।

हमारी पाठशालाओं में उपयुक्त शिक्षोपकरणों का अभाव है इस अभाव का एक कारण हमारी आर्थिक स्थिति है। हम इस दशा में नहीं है। कि इन मंहगे उपकरणों को क्रय कर सके। यद्धपि आज पाठशालाओं में जो उपकरण उपलब्ध भी है। अध्यापकों द्वारा उनका समुचित प्रयोग नहीं किया जा रहा है। यह तो नगरों की स्थिति है। ग्रामो की स्थिति यदि इससे भी शोचनीय है, इसमें कोई आश्चर्य की बात नही है।

शिक्षा तकनीकी के द्वारा ऐसे साधन उपलब्ध हो सकते है। जो विद्यार्थीयों के ज्ञान और अनुभव की अभिवृद्धि में सहायक हो अध्यापक को जो सामायिक दुविधाएँ हो सकती है। उनका निराकरण शैक्षिक तकनीकी में आधुनिक प्रवृत्तियो के द्वारा किया जा सकता है।

ISSN : 2348-0033 (Online) | ISSN : 2249-4944 (Print)

शिक्षा तकनीकी में आधुनिक प्रवृत्तियाँ अध्यापक को ऐसे साधन देती है। जो उपचारात्मक शिक्षण, शोध–कार्यों और तदुपरान्त क्रियाओं में सहायक होता है।

शैक्षिक तकनीकी में आधुनिक प्रवृत्तियाँ अध्यापक की गुणात्मक योग्यता की वृद्धि कर सकती है। वे ऐसे आधार प्रदान करती है, जिससे छात्र विभिन्न विविधतापूर्ण क्रियाओं में सम्मिलित हो।

lUnHkZ iqLrd

भाई योगेन्द्र जीत – शिक्षा में नवीन प्रवृत्तियाँ एवं नवाचार – अग्रवाल पब्लिकेशन

सुनीता सिंह

डा0 आर0 ए0 शर्मा –शिक्षा का तुल्नात्मक अध्ययन – R. Lall Book Depo.

Ayer fred (1956) fundamentals of Instructional Supervision – Harper and Brothers.

Mukerjee (1960) Problems of Administration of Educational in India – Kitab Mahal, Allahabad.

नेहा जिन्दल, अध्यापिका, जे0वी0 जैन कालिज, सहारनपुर, उ0प्र0, भारत।